Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

नीरज की काव्य संवेदना

डॉ. गोरख प्रभाकर काकडे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
सरस्वती भुवन कला एवं वाणिज्य
महाविद्यलय, छत्रपति संभाजीनगर
मो. 9011436144
इमेल:dr.gorakhkakade@gmail.com

"फूलों के रंग से, दिल की कलम से, तुझको लिखी रोज पाती ।
कैसे बताऊं किस किस तरह से, पल-पल मुझे तू सताती।।"

जैसे अजर, अमर गीत लिखनेवाले 'नीरज' का जन्म 4 जनवरी, 1925 में इटावा जिले के पुरावली नामक गांव में ब्रजकिशोर सक्सेना के घर हुआ। यही गोपालदास सक्सेना साहित्यिक मंडली में आगे 'नीरज' के नाम से प्रसिद्ध हुए और इस नाम को समाज मान्यता भी मिली। 'नीरज' का बचपन संघर्षो से भरा रहा। वे मात्र छ: वर्ष की आयु में पिता की छत्रछाया से वंचित हुए। पढ़ाई का सफर काफी मुश्किलों भरा रहा। वे इंटर के बाद आगे पढ़ना चाहते थे किंतु घर के हालात के कारण उन्हें कोई ना कोई नौकरी करनी जरूरी था। नीरज ने शुरुआती दौर में बहुत सी जगह नौकरियां की। ऐसे में भी पढ़ाई के प्रति उनकी दिलचस्पी कम नहीं हुई। वह प्राइवेट से परीक्षाएं देते रहे। आगे उन्हें 'धर्मराज कॉलेज अलीगढ़' में प्राध्यापक के रूप में नौकरी मिली। यह नौकरी उनके जीवन को स्थिरता देने में सफल रही। साथ ही वे तत्कालीन समय में मंचीय कवियों में उभरते हुए सितारे के रूप में प्रसिद्धि पा गए। काव्य सम्मेलनों में नीरज बड़े ही गर्म जोशी से अपनी कविताएं सुनाया करते थे।

अपने जीवन को, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्होंने माध्यम बनाया कविता को। वे लिखते हैं, 'कहानी बन के जिये हम तो इस जमाने में, लगेगी आपकों सदियाँ हमें भुलाने में।' नीरज की कविताओं में, गीतों में व्यक्तिगत भाव-भावनाएं पुरजोर तरीके से अभिव्यक्त हुई दिखाई देती हैं। यह व्यक्तिगत भावनाएं हमेशा मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती रही है। वे लिखते हैं,

"मैंने चाहा नहीं कि कोई
आकर मेरा दर्द बँटाये,
बस यह ख्वाहिश रही कि -
मेरी उमर जमाने को लग जाये।"[1]

छोटी उम्र में ही जिंदगी ने उन्हें कई रंग दिखाए थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में वह डगमगाए नहीं। जिंदगी के प्रति उनका हमेशा आशावादी और विश्वास भरा दृष्टिकोन रहा। उनका विश्वास था कि कठिन समय में भी अपने कर्तव्य को व्यक्ति ने खूब निभाना आवश्यक है। इसी विश्वास के बूते पर कठिन राहे भी आसन हो जाती हैं। वे अपने एक गीत में लिखते हैं,

"रूठ मत मेरी उमर, मत टूट मेरी आस,
जिंदगी विश्वास है, विश्वास बस विश्वास,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

पोछते आँसू बिलखती सारिकाओं के ।
श्याम आयेंगे जरूर गोपिकाओं के ।।"[2]

आशावादी दृष्टिकोण ही उनके जीवन की प्रेरणा रही। हालात बदलते रहें। कविता, गीत लेखन का सफर आगे बढ़ता गया। किताबों से ज्यादा सबक उन्हें जिंदगी की किताब ने सिखाए थें। हर एक अनुभव उन्हें एक नया हौसला देता गया। वे जीवन की क्षण भंगुरता से भी परिचित थे, परंतु इस क्षण भंगुरता को उन्होंने सकारात्मक से देखकर अपना वजूद सिद्ध करने की प्रेरणा खुद भी ली और दूसरों को भी दी। वे अपने अनुभव की लेखनी से लिखते हैं,

'रमता जोगी, बहता पानी -
अपनी इतनी सिर्फ़ कहानी
पल भर के मेहमान कि जैसे बुझते दिये विहान के।
हम पत्ते तूफ़ान के ।।"[3]

जिंदगी के संघर्षों से वह कभी घबराए नहीं। न उससे कभी पीछे हटे। वे डटकर उसका सामना करते रहे। उनकी इन पंक्तियों को पढ़ते वक्त लगता है कि जैसे वे जिंदगी को मानो चुनौती दे रहे हो,

"मैं पंथी तूफानों में राह बनाता,
मेरा दुनिया से केवल इतना नाता -
वह मुझे रोकती है अवरोध बिछाकर,
मैं ठोकर उसे लगाकर बढ़ता जाता,
मैं ठुकरा सकूँ तुम्हें भी हंसकर जिससे
तुम मेरा मन-मानस पाषाण करो।
मैं तूफानों में चलने का आदी हूं
तुम मत मेरी मंजिल आसान करो।"[4]

नीरज के काव्य में व्यक्तिगत, सामाजिक संवेदनाएं स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उनकी यह संवेदनाएं, दुख, दर्द, संघर्ष सब कुछ निजी होकर भी सामाजिक बनता है। वे व्यक्ति की बात करते-करते समष्टि को अपनाने की बात करते हैं,

"इसको भी अपनाता चल, उसको भी अपनाता चल,
राही है सब एक डगर के, सब पर प्यार लुटाता चल ।"[5]

वह दिन-दलित, अमीर-गरीब सबको अपनाने की बात करते हैं। सभी देशवासियों के प्रति वह अपना प्रेम इन काव्य पंक्तियों से व्यक्त करते हैं,

"मैं उन सबका हूं कि नहीं कोई जिनका संसार में!
एक नहीं, दो नहीं, हजारों साझी मेरे प्यार में!!"[6]

भारत जैसे विशाल देश में अलग-अलग धार्मिक आस्थाओं के लोग रहते हैं। उन सबको एक-सूत्र में पिरोकर एक माला के रूप में जोड़े रखना आवश्यक है। धार्मिक सहिष्णुता बनी रहे। हमारी बुनियाद इंसानियत है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

बाद में हम हिंदू-मुस्लिम-सिख-इसाई हैं। मानवता ही धर्म है। यह पाठ नीरज अपनी कविता के माध्यम से देते हैं,

"हम नहीं हिंदू-मुसलमाँ, हम नहीं शेखो-बिरहमन,
हम नहीं काजी-पुरोहित, हम नहीं रामू-रहीमन,
भेद से आगे खड़े हम, फर्क से अनजान हैं हम
प्यार है मजहब हमारा और बस इंसान है हम।"[7]

यही इंसानियत धर्म है। इससे बड़ा कोई मजहब नहीं। नीरज का मानना है कि मन शुद्ध होना चाहिए। मानवता को प्रमुखता देनी चाहिए। 'नीरज' ने मन की शुद्धता को महत्त्व दिया है। मन यदि स्वच्छ नहीं है, वह अगर घृणा, द्वेष, कपट से भरा है, तो ऐसे व्यक्ति चाहे कितने भी काबा-काशी के चक्कर लगाले कोई फर्क नहीं पड़ेगा। बाहरी दिखावा अंत:करण को शुद्ध नहीं करता। उसके लिए मन का साफ होना जरूरी है। वह लिखते हैं,

"काबा जाओ, काशी जाओ, गंगा में डुबकियां लगाओ,
दिल का देवालय गंदा तो, फंदा सारा धरम-करम है!
चाहे बरसे जेठ अंगारे या पतझर हर फूल उतारे ..."[8]

यही संवेदना उनकी 'फिरका परस्तों के नाम' कविता में भी दिखाई देती है। वे लिखते हैं,

"जाति-पांति से बड़ा धर्म है,
धर्म-ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्म-कांड से बड़ा मर्म है,
मगर सभी से बड़ा यहां यह छोटा सा इंसान है,
और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है।"[9]

मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। इंसान, इंसान बना रहे यह महत्त्वपूर्ण है। यदि इंसान ही नहीं तो फिर काहे का धर्म, काहे का कर्म। आदमी की इंसानियत ही उसकी सबसे बड़ी पहचान है। नीरज ने अपनी कविताओं के माध्यम से इंसानियत का संदेश दिया है। इन काव्य पंक्तियों को पढने के बाद हमें कबीर की याद न आये ऐसा हो ही नहीं सकता। ऐसा लगता है की हम कबीर के सच्चे शागिर्द को पढ़ रहे हैं। वे कबीर के 'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय'। जैसी काव्य पंक्तियों की यद् दिलाते हैं ।

नीरज ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर भी कविता के माध्यम से प्रश्न उपस्थित किए हैं। वे भारतीय स्वतंत्रता और परतंत्रता के साक्षी रहे हैं। 'आजादी' के बाद जो 'मोहभंग' हुआ था, उससे देश के हालात ठीक नहीं थे। आम आदमी संभ्रम की अवस्था में था। ऐसे समय में उसे कई चिंताओं और समस्याओं ने घेर रखा था। इन्हीं हालातों को देख नीरज कहते हैं,

"सोचता हूं क्या यही स्वप्न था आजादी का?
रावी-तट पे क्या कसम हमने यही खाई थी?
क्या इसी वास्ते तड़पती थी भगत सिंह की लाश?
दिल्ली बापू ने गरम खून से नहलाई थी?"[10]

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

देश की आजादी के लिए असंख्य भारतीयों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे किंतु मौजूदा देश के हालात देख यही प्रश्न निर्माण होता है कि क्या इसीलिए आजादी के परवानों ने हँसतें-हँसते प्राणों के बलिदान दिए थे।

स्वतंत्रता के बाद देश में सत्ता का विकेंद्रीकरण होने की बजाय केन्द्रीकरण हो रहा था। सभी सामाजिक संसाधनों के विषम वितरण के कारण समाज में असमतोल निर्माण हो गया था। गरीबी-अमीरी की खाई बढ़ती जा रही थी। जिससे असंतोष भरी स्थितियां निर्माण हो रही थी। आजादी के लिए सबकुछ लुटानेवालों ने क्या यही ख्वाब देखा था? स्वतंत्रता, समता, बंधुता का नारा क्या इसीलिए लगाया था? ऐसे अनेक प्रश्न आम आदमी के मन में निर्माण हो रहे थे। जिसे वाणी देने का कम तत्कालीन साहित्यकारों, समाजसेवियों ने किया था। जिसमें एक नीरज भी थे। वे लिखते हैं,

"पूछ रहा मैं आज स्वयं से, आखिर क्या इसका कारण है,
प्यास सभी की एक जगत में, पर न सुधा का सम वितरण है।"[11]

इन पंक्तियों से नीरज की सामाजिक प्रतिबद्धता और संबद्धता स्पष्ट होती है। नीरज ने जिन स्थितियों का चित्रण अपनी कविताओं के माध्यम से किया हैं, वे आज भी बदली हुई नहीं हैं।

जब-जब देश पर संकट आया तब-तब हमारे वीर-जवानों ने उसका साहस के साथ मुकाबला किया। सरहद की तरफ बढ़नेवाले दुश्मन के कदमों को मुंहतोड़ जवाब दिया और हमारे देश के तिरंगे का सर हमेशा ऊंचा रखा। ऐसे वीर-जवानों का हौसला बढ़ाने के लिए नीरज लिखते हैं,

"गंगा की कसम जमुना की कसम,
बस एक कदम, बस एक कदम!
ओ देश के जवानों उठो जहां बदल दो,
सारी जमीन बदल दो, सब आसमां बदल दो,
यह गुलसिताँ बदल दो, यह बागबाँ बदल दो!"[12]

देश के वीर जवानों को देश के लिए मर मिटने का संदेश कविता देती है। नीरज जब मंच पर कविता पढ़ते थे तब एक अलग ही समा बंधता था। श्रोता मंत्र-मुग्ध होकर कविताएं सुनते थे। नीरज हमेशा मंच पर एक नई कविता सुनाया करते थे। उसी में से एक है उनकी यह कालजयी कृति,

"स्वप्न-झरे फूल से,
मीत-चुभे शूल से,
लूट गए सिंगार सभी बाग के बबूल से;
और हम खड़े-खड़े बहार देखते रहे,
कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे!"[13]

इस गीत को श्रोताओं ने खूब सरहाया। बाद में यही गीत 'नई उमर की नई फसल' इस फिल्म में लिया गया। इस गीत को भारत ही नहीं भारत के बहार भी बहुत ज्यादा पसंद किया गया।

नीरज ने अपनी कविताओं द्वारा अपना संघर्षपूर्ण जीवन, प्रेम संवेदनाएं, देश के उभरी राजनीतिक, सामाजिक समस्याएं जैसे अनेक पहलुओं को उजागर किया है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

नीरज का साहित्य-सफर कविताओं पर खत्म नहीं होता। उन्होंने फिल्मों के लिए भी कई मशहूर गीत लिखे। नीरज के फिल्मों के लिए लिखे गीत आज भी सदाबहार गीतों की श्रेणी में आते हैं। नीरज के लिखे गीतों का कारवाँ आज भी बरक़रार है। जिसमें से यहाँ कुछ चुनिंदा गीतों के केवल नामों का उल्लेख कर रहे हैं - 'देखते ही रहो आज दर्पण न तुम भी', 'वह हम ना थे, वह तुम न थे', 'सुबह न आयी, शाम ना आयी','तुम नाचो रस बरसे','यह कौन था सो रहा है','जिंदगी दुल्हन है एक रात की','रंगीला रे, तेरे रंग में रंगा है यूं मेरा मन','फूलों के रंग से, दिल की कलम से, तुझको लिखी रोज पाती','चूड़ी नहीं यह मेरा दिल है', 'शोखियों में घोला जाए फूलों का शवाब', 'मेरा मन तेरा प्यासा', 'ओ मेरी, ओ मेरी, ओ मेरी शर्मिली', 'मेघा छाएँ आधी रात, बैरन बन गई निंदिया', 'दिल आज शायर है, शब यह नगमा है', 'जीवन की बगिया महकेंगी', 'मिलते हैं गुल यहां; खिल के बिखरने को', 'हे मैंने कसम ली, हे तूने कसम ली', 'जैसे राधा ने माला जपी श्याम की', 'धीरे से जाना खटियन में, ओ....खटमल', 'आज मदहोश हुआ जाए रे, मेरा मन, मेरा मन', 'पानी में जले, मेरा गोरा बदन' आदि। फिल्म 'चंदा और बिजली' का गीत 'काल का पहिया घूमे रे भैया' को 'फिल्म फेयर अवार्ड' देकर नवाजा गया था। नीरज के योगदान को देखते हुए उन्हें भारत सरकार द्वारा सन् 1991 में 'पद्मश्री' से और 2007 में 'पद्मभूषण' से नवाजा गया है।

कवि गोपालदास 'नीरज' का सफर संघर्षमय रहा। इस सफर में नीरज कविताएं लिखते गए और कारवाँ बनता गया। नीरज की मंचीय कविताओं को खूब सरहाया गया। नीरज ने जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी कलम से सदाबहार गीतों की रचना की। उन्होंने अपनी कविताओं, गीतों के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उजागर किया है। नीरज जन-मानस के दिलों पर अपनी कविताओं के माध्यम से राज करते रहे हैं। जब तक गीत-संगीत रहेगा तब तक गोपालदास नीरज का नाम रहेगा।

संदर्भ:

1) कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1965,पृ.7,8

2) वहीं ,पृ. 26

3) वहीं ,पृ. 19

4) नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1964,पृ.105

5) वहीं ,पृ. 91

6) नीरज के लोकप्रिय गीत - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1967,पृ.106

7) नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1964,पृ.53

8) कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1965,पृ.14

9) नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1964,पृ.95

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

10) वहीं ,पृ.18

11) नीरज के लोकप्रिय गीत - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1967,पृ.63

12) कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज', हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, सं.1965,पृ.83

13) वहीं ,पृ. 78